NCERT SOLUTIONS

CLASS - 9th



aglasem.com

Class : 9th

Subject : इतिहास

Chapter : 2

Chapter Name: यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति

Q1 रूस के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक हालात 1905 से पहले कैसे थे?
Answer. आधुनिक विश्व के इतिहास में रूस की 1905 की क्रांति ऐतिहासिक महत्व रखती है। इस क्रांति के लिए कई हालात जिम्मेदार थे। इसके पीछे रूस के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक हालात थे जिन्हें हम इस प्रकार समझ सकते हैं-

सामाजिक हालात- रूसी समाज में सबसे ज्यादा संख्या किसानों की थी, वे धार्मिक स्वभाव के होते थे और नवाबों की बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करते थे। मज़दूरों में अनेक स्तर पर वरीयता होती थी, कामगार महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम वेतन मिलता था। 1902 के दौरान तो कई किसानों ने जमींदारों की हत्या तक कर दी थी।
आर्थिक हालात- रूस में समूचे यूरोप की तुलना में सबसे कम उद्योग थे। परिणाम स्वरूप व्यापार कम होता था। 1890 के दशक में रेल नेटवर्क का प्रसार हुआ जिसके चलते थोड़े और उद्योग पनपे तथा विदेशी निवेश बढ़ने लगा। कोयला और स्टील के उत्पादन में वृद्धि हुई। काम के घंटों और उचित वेतन की देखरेख में कड़ी निगरानी के बाद भी फैक्ट्री इंस्पेक्टर नियमों का उल्लंघन रोकने में सक्षम नहीं थे। मज़दूरों को फैक्ट्री से निकाल दिए जाने पर हड़तालें आम बात हो चली थी। 1904 में तो वेतन कम कर दिया गया जिससे हालत और खराब हो गए।
राजनीतिक हालात- रूस में जार शाही थी। उस समय राजा ज़ार निकोलस 2 का शासन था। वहां राजनीतिक पार्टियां गैरकानूनी थीं। हालांकि 1898 में कार्ल मार्क्स के समर्थन में समाजवादियों ने 'रशियन सामाजिक लोकतांत्रिक श्रमिक पार्टी' का गठन किया, पर गैरकानूनी पार्टी की तरह काम करना पड़ा। रूस के ग्रामीण हिस्सों में किसान समाजवादी विचारधारा से काफी मिलते-जुलते थे। 1900 में उन्होंने 'समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी' गठित करी तथा सामंतों से ज़मीन वापस मांगी।
इस प्रकार यह हालात 1905 की क्रांति के कारण बने, जिसने आगे चलकर रूस को समाजवादी धारा का सबसे अग्रणी देश बना लिया दिया।

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q2 1917 से पहले रूस की कामकाजी आबादी यूरोप के बाकी देशों के मुकाबले किन किन स्तरों पर भिन्न थी?

Answer. वर्ष 1917 में रूस में दो क्रांतियां हुई - फरवरी और अक्टूबर क्रांति। इनके कारणों में वहां की समाज की वह परिस्थितियां थी जिन्होंने लोगों को क्रांति के लिए विवश किया। रूस का समाज यूरोप से काफी अलग था। वहां की आबादी में 85% किसान थे तथा बाकी बचे मज़दूर और कारीगर थे। किसान धार्मिक होते थे व सामंतों में विश्वास नहीं करते थे। जहां एक ओर फ्रांस में किसान अपने नवाबों को बचाने के लिए लड़ाई तक कर लेते थे वहीं रूस में तो किसानों ने अनेक जमींदारों की हत्या तक कर दी थी। रूसी किसान, यूरोप के बाकी किसानों से हटकर समय-समय पर सारी ज़मीन को अपने कम्यून अर्थात मीर को सौंप देते थे और फिर कम्यून ही प्रत्येक परिवार की जरूरत के हिसाब से किसानों को ज़मीन बाँटता था। मज़दूरों में दक्षता व योग्यता के स्तर पर विभाजन था। धातु कर्मी सबसे ऊँचे माने जाते थे। औरतें कम थी तथा कम वेतन पाती थीं। कुछ मज़दूरों ने आर्थिक संकट में मदद के लिए संगठन बनाए थे। प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ में ही रूस अपने काफी सैनिक खो चुका था। सैनिकों का मनोबल टूट चुका था। 1914 व 1916 के बीच जर्मनी व ऑस्ट्रिया में रूसी सेनाओं को हार देखनी पड़ी थी। युद्ध से तंग आकर सिपाही भी अब लड़ना नहीं चाहते थे। जर्मनी ने जब बाल्टिक समुद्र पर कब्ज़ा कर लिया, तब रूस में बाहर से आने वाली आपूर्ति भी बंद हो गई थी। 1916 तक रेलवे लाइनें टूटने लगी और बचे उद्योग भी खत्म होने लगे। यूरोप के बाकी देशों के मुकाबले रूस के औद्योगिक उपकरण बेकार होने लगे।
इस प्रकार सरकार व ज़ार की घटती लोकप्रियता, भुखमरी, दंगों व बेरोज़गारी ने रूस के कामकाजी समाज को हर स्तर पर यूरोप के अन्य देशों से कमतर बना दिया था।

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q3 1917 में जार का शासन क्यों खत्म हो गया ?

Answer. रूस में निरंकुश राजशाही थी। वह किसी के प्रति उत्तरदाई नहीं होता था। 1905 से ही ज़ार की नीतियों के प्रति विरोध के स्वर प्रबल होने आरंभ हो चुके थे। 1917 में अंततः ज़ार शाही को समाप्त कर दिया गया। इस अंत के निम्नलिखित कारण थे-

1905 की क्रांति- भले ही इस क्रांति ने ज़ार शाही का अंत न किया, पर इसके अंत की शुरुआत का बिगुल बजा दिया था। क्रांति के दौरान ज़ार ने एक निर्वाचित परामर्शदाता संसद ड्यूमा का गठन किया पर जल्द

ही ज़ार ने ड्यूमा को बर्खास्त कर दिया। उसने अगली ड्यूमा में रूढ़िवादी नेताओं को भर डाला। जाहिर है कि जार अपने ऊपर किसी तरह का अंकुश नहीं चाहता था।

प्रथम विश्व युद्ध- इस युद्ध में जार शाही की गलत नीतियों ने रूस को आर्थिक व सामाजिक पतन की तरफ धकेल दिया था। सैनिकों में सरकार के खिलाफ भावनाएं घर कर गई थी। सैनिक अब किसानों व मजदूरों के संग हो गए थे, जिससे जार की सत्ता ढह गई।

फरवरी क्रांति- क्रांति के अंत तक ज़ार ने सैनिक कमांडरों की गद्दी छोड़ने वाली बात मान ली थी।

वैचारिक लड़ाई- रूस में किसान समाजवादी विचारधारा के काफी करीब थे। उदारवादियों ने भी रूस में निरंकुशता खत्म करने की पहल की जिसमें उन्हें राष्ट्रवादियों और ज़दीदियों का भी समर्थन मिला।

उपरोक्त कारणों के परिणाम स्वरूप रूस में जार शाही का अंत हुआ।

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q4 दो सूचियां बनाइए- एक सूची में फरवरी क्रांति की मुख्य घटनाओं और प्रभावों को लिखिए और दूसरी सूची में अक्टूबर क्रांति की प्रमुख घटनाओं और प्रभावों को दर्ज कीजिए।

Answer.

फरवरी क्रांति	अक्टूबर क्रांति
घटनाएं - 1. जहां मजदूर रहते थे वहां खाद्य पदार्थों की बेहद कमी हो गई । 2. फैक्ट्रियों में तालाबंदी और हड़तालें हुई। 3. ड्यूमा बर्खास्त कर दी गई। 4. रोटी, पैसा, काम के घंटों में कमी और लोकतांत्रिक अधिकारों के पक्ष में असंख्य लोग सड़कों पर जमा हो गए। 5. सैनिकों ने अपने अफसरों पर ही गोली चला दी। 6. ज़ार ने गद्दी छोड़ दी। 7. लेनिन ने अप्रैल थीसिस बताई जिसमें	घटनाएं - 1. अंतरिम सरकार व बोल्शेविकों में मनमुटाव बढ़ने लगा। 2. अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री केरेनस्की ने सैनिकों की मदद से बोल्शेविकों के अखबारों के दफ्तरों में छापे डाले। 3. बोल्शेविकों ने भी पलटवार कर सरकारी कार्यालयों पर कब्जा कर लिया। 4. अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस ने बोल्शेविकों की कार्यवाही का समर्थन किया।

aglasem.com

बोल्शेविकों ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण, किसानों को जमीन की वापसी व युद्ध समाप्ति का आह्वान किया।	
<u>प्रभाव</u> - 1. फैक्ट्रियों में हड़तालों का नेतृत्व महिलाएं कर रही थीं, इसका प्रभाव यह हुआ कि 22 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया गया 2. ज़ारशाही का अंत हो गया, जिससे अंतरिम सरकार का गठन हुआ तथा यह तय हुआ कि भविष्य की सभी फैसले मताधिकार से चुनी हुई संविधान सभा ही करेगी। 3. कुछ समय बाद अंतरिम सरकार में विश्वास कम हो गया जिससे बोल्शेविकों का प्रभाव बढ़ा, पर सरकार ने उनका दमन किया।	<u>प्रभाव</u> - 1. बोल्शेविक रूस में पूर्ण रूप से समाजवाद स्थापित करना चाहते थे। 2. हालांकि क्रांति के ठीक बाद के चुनावों में उन्हें बहुमत नहीं मिला, पर आने वाले वर्षों में बोल्शेविक पार्टी अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस के लिए होने वाले चुनावों में हिस्सा लेने वाली इकलौती पार्टी रह गई । 3. अब रूस एक दलीय राजनीति व्यवस्था वाला देश बन गया । 4. परंतु हर सरकार की तरह बोल्शेविक पार्टी भी समय रहते तानाशाही रवैया अपनाने लगी। सेंसरशिप से लोग नाराज हो गए, आगे जाकर ग्रह युद्ध की स्थितियां बनीं।

aglasem.com

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q5. अक्टूबर क्रांति के फौरन बाद कौन कौन से प्रमुख परिवर्तन किये गए?

Answer. अक्टूबर क्रांति के बाद बोल्शेविकों ने निम्नलिखित बदलाव किए-

1. सर्वप्रथम पार्टी का नाम बोल्शेविक से बदलकर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) कर दिया।
2. अप्रैल थीसिस को लागू करना प्रारंभ किया-
    a. ज्यादातर बैंकों और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हुआ ।
    b. किसानों ने सामंतों की जमीनों पर कब्जा किया।

3. बड़े-बड़े मकानों को छोटे-छोटे भागों में बांटा गया ताकि जरूरतमंदों को भी रहने की जगह मिले।
4. अभिजात वर्ग जिन पदवियों का प्रयोग करते थे, उस पर रोक लगा दी गई।
5. परिवर्तन पूर्ण रूप से दिखे इसलिए सेना की वर्दी बदली गई।
6. अब रूस एक दलीय राजनीतिक व्यवस्था वाला देश बन गया था।
7. सेंसरशिप लगाई, जिससे लेखकों व कलाकारों को गुप्तचर पुलिस गिरफ्तार कर सकती थी।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अक्टूबर 1917 के बाद बोल्शेविक पार्टी ने अच्छे और बुरे दोनों तरह के परिवर्तन किये।

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

Q6. संक्षिप्त लेख

1. कुलक
2. ड्यूमा
3. 1900 से 1930 के बीच महिला कामगार
4. उदारवादी
5. स्टालिन का सामूहिकीकरण कार्यक्रम

Answer.

1. कुलक - रूस के संपन्न किसान। स्टालिन के समय कुलकों के ठिकानों पर छापे मारकर अनाज जप्त किया जाता था। आधुनिक खेती के विकास के लिए बड़ी जमीनों को छीनना और सरकारी विशालकाय खेत बनाने के साथ-साथ कुलकों का सफाया करना भी आवश्यक माना गया।
2. ड्यूमा - रूस की निर्वाचित संसद। लगभग 1906 में अस्तित्व में आई। जार पर अंकुश लगाने हेतु स्थापित की गई, पर कई बार बर्खास्त हुई । ज़ार उदारवादी तथा क्रांतिकारी नेताओं को बाहर रखकर ड्यूमा में रूढ़िवादी नेताओं को स्थान दे दिया करते थे ।
3. 1900 से 1930 के बीच महिला कामगार - महिलाएं भी पुरुषों की तरह कारखानों में काम करती थीं। उन्हें कम वेतन मिलता था। फरवरी 1917 की क्रांति में उनके योगदान को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 1930 के दशक में महिलाओं और बच्चों के लिए बालवाड़ियाँ खोली गई।

aglasem.com

4. उदारवादी - वह लोग जो उदारवाद नामक विचारधारा को मानते हैं। उदारवादी सभी के लिए बराबर सम्मान चाहते हैं। वह लोगों के अधिकारों के पक्षधर हैं, परंतु यह लोकतंत्रवादी नहीं थे। वह संपत्तिधारियों को ही मताधिकार देने के पक्ष में थे ।
5. स्टालिन का सामूहिकीकरण कार्यक्रम - स्टालिन ने लेनिन के बाद जब सत्ता संभाली तब अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए सामूहिकीकरण कार्यक्रम अपनाया। उन्होंने व्यापारियों व कुलकों से अनाज जप्त किया, ताकि अनाज की कीमतें कम हों। अनाज की कमी दूर करने के लिए 1929 में सभी किसानों को सामूहिक खेतों (कोलखोज) पर काम करने का आदेश दिया। मुनाफा किसान आपस में बांटते थे। कुछ किसानों को सरकार ने बिना किसी सहायता के स्वतंत्र किसानी करने की इजाजत भी दी थी। सामूहिकीकरण के बाद भी अकाल पड़ा। विरोधियों पर स्टालिन ने समाजवाद के विरुद्ध जाने का आरोप लगाया।

Page : 48 , Block Name : प्रश्न (long answer question)

aglasem.com